रामेश्वर काम्बोज ’हिमांशु’जी के गद्य का अनुशीलन : लघुकथा, व्यंग्य एवं बालकथा के विशेष संदर्भ में

हिन्दी विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु
कला एवं मानविकी महाविद्यालय,
आई० आई०एम०टी० विश्वविद्यालय मेरठ
की प्रस्तुत प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा
वर्ष 2021–22

शोध निर्देशक: शोधार्थिनी
डॉ0 बबलू कुमार कुसुम
एसोसिएट प्रोफेसर, (कला एवं मानविकी महाविद्यालय)
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ

शोध केन्द्र
कला एवं मानविकी महाविद्यालय,
आई० आई०एम०टी० विश्वविद्यालय मेरठ (उत्तर प्रदेश)

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'जी के गद्य का अनुशीलन : लघुकथा, व्यंग्य एवं बालकथा के विशेष संदर्भ में

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह अपने विचार दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। और दूसरों के विचार स्वयं समझना चाहता है। लोगों के बीच होने वाला विचारों का यह आदान–प्रदान ही "सम्प्रेषण" कहलाता है। हम लोग भी अपनी बातें दूसरों तक सम्प्रेषित करने के लिए कभी इशारे या अस्पष्ट ध्वनियों का सहारा लेते हैं तो कभी ताली बजाकर अपनी बात कह देते है, किंतु मुन्षय सम्प्रेषण के लिए सबसे अधिक जिस माध्यम का सहारा लेते है, वह है "भाषा"। "भाषा" मनुष्य के पास एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से वह समाज के अन्य लोगों से भावों और विचारों का आदान–प्रदान करता है।

समाज या समुदाय ही किसी भाषा के विकास का प्रमुख आधार है। भाव, विचार, चिंतन, कल्पना सबकी उडान भाषा से ही संभव है। इन सबकी अभिव्यक्ति ही उसे सामाजिक प्राणी बनाती है।

प्राचीनकाल से भाषा की उत्पत्ति पर विचार होता रहा है। भाषा उत्पत्ति का विषय अत्यंत विवादस्पद है। विभिन्न भाषा–वैज्ञानिकों ने भाषा–उत्पत्ति पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, किन्तु अधिकांश मत कल्पना पर आधारित हैं। इनमें कोई भी तर्क संगत, पूर्ण प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक नहीं है। इसी कारण किसी भी मत को सर्वसम्मति से स्वीकृति नहीं मिल सकी है।

भाषा मनुष्य के मुख से उच्चारित होती है। वास्तव में हम तरह–तरह की ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। इन ध्वनियों के परस्पर मेल से शब्द इस प्रकार बनते हैं; जैसे–'क', 'म' तथा 'ल' ध्वनियों के संयोग से हम 'कमल' शब्द बना सकते हैं, किन्तु इन्हीं ध्वनियों से बनने वाले 'मकल' या 'लकम' शब्दों को हम हिन्दी भाषा के शब्द नहीं कह सकते; अर्थात् भाषा में केवल सार्थक अथवा अर्थवान शब्द ही मान्य होते हैं, निरर्थक नहीं।

उपर्युक्त विवेचन के बाद अब हम भाषा की निम्नलिखित परिभाषा दे सकते हैं–

भाषा ध्वनि–प्रतीकों की ऐसी व्यवस्था है, जिसके माध्यम से किसी समाज के सदस्य परस्पर भावों और विचारों को बोलकर या लिखकर आदान–प्रदान या सम्प्रेषण करते हैं। जिस साधन के द्वारा मनुष्य अपने भावों को विचारों को लिखकर या बोलकर प्रकट करता है। उसे भाषा कहते हैं।

वर्तमान में उपन्यास, कहानी , नाटक , निबन्ध आदि मुख्य विधाओं मे पर्याप्त लेखन हो रहा है। गद्य की इनसे इतर विधाओं जैसे–आत्मकथा, संस्करण, रेखाचित्र, डायरी, रिपोर्ताज , जीवनी, यात्रा संस्मरण आदि में लेखन अपेक्षाकृत कम हो रहा है। विशेषतया व्यंग्य पर लेखनी कम ही चल रही है।

हिंदी साहित्य में, गद्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी की सहायता से सूर्य की किरणों के समान अपनी आभा फैला रहे हैं – रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'।

आज मानव औद्योगिकीकरण के प्रभावस्वरूप एक दूसरे से आगे निकलने की होड में स्वयं के लिए ही समय नहीं दे पा रहा है। परिणामस्वरुप भारत जैसे महान देश में हर तीसरा–चौथा व्यक्ति अवसाद का शिकार पाया जा रहा है। एक दिन मैंने हिमांशु जी द्वारा रचित व्यंग्य संग्रह 'खूँटी पर टंगी आत्मा' नामक पुस्तक पढ़ी। तो लगा कि यदि हम अवसाद जैसे घातक रोग से दूर रहना चाहते है तो व्यंग्य एक अच्छे स्रोत के रुप में कार्य करता है। साथ ही मनुष्य के पास आज की आपाधापी में कम समय होने के कारण वह लम्बी–लम्बी कथाएँ पढ़ने को तत्पर नही होता। परन्तु लघुकथा पढ़ने को मानव–मन तत्पर हो जाता है।

आज का युग तकनीकी युग है। जब मैंने लघुकथा की वेबसाइट खोजी तो मुझे लघुकथा की एक मात्र वेबसाइट ***Laghukatha.com*** देखी तो अनायास ही मेरा ध्यान रामेश्वर काम्बोज 'हिमाशु' जी पर गया। जिन्होंने लघुकथा के क्षेत्र में विशेष रुप से लेखन कार्य किया है। मैंने काफी सोचने विचारने के बाद यह तय किया कि मैं अपना शोध कार्य लघुकथा की एक मात्र वेबसाइट सम्पादित करने वाले व्यंग्य, लघुकथा, बालकथा, उपन्यास, व्याकरण, रचनात्मक लेखन, आलोचना आदि क्षेत्रों में अपनी लेखनी का प्रयोग करने में सिद्धहस्त श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' पर पूर्वाग्रहों से मुक्त हो पूरी मेहनत और लगन के साथ करुंगी।

विषयानुक्रम

भूमिका

प्रथम अध्याय

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हिमांशु जी का व्यक्तित्व

जन्म एवं जन्म स्थान

पारिवारिक स्थिति

शिक्षा और आजीविका

अभिरुचि

हिमांशु जी का कृतित्व

लघुकथा संग्रह

लघुकथा समालोचना

व्यंग्य संग्रह

बालकथा

बालकथा –हिंदी और अंग्रेजी

रोचक बालकथाएं

पोस्टर बालकथाएं

लघु उपन्यास

कविता संग्रह

काव्य समालोचना

व्याकरण

हाइकु संग्रह

तॉका संग्रह

तॉका–सेदोका–चोका संग्रह

तॉका और चोका संग्रह

अनुवाद

संपादन

विशेषांक संपादन

अन्य गतिविधियॉ

द्वितीय अध्याय

हिमांशु जी की लघुकथा, व्यंग्य एवं बालकथा का साहित्यिक विमर्श

लघुकथा का साहित्यिक विमर्श

व्यंग्य का साहित्यिक विमर्श

बालकथा का साहित्यिक विमर्श

तृतीय अध्याय

हिमांशु जी की लघुकथाओं का अनुशीलन

साम्प्रदायिकता पर आधारित लघुकथा

आर्थिक स्थिति पर आधारित लघुकथा

सकारात्मक सोच पर आधारित लघुकथा

अहं पर आधारित लघुकथा

रंगभेद पर आधारित लघुकथा

लिंगभेद पर आधारित लघुकथा

बाल मनोविज्ञान पर आधारित लघुकथा

चतुर्थ अध्याय

हिमांशु जी की व्यंग्यात्मक रचनाओं का अनुशीलन

दफ्तरी विकृतियों पर व्यंग्य

पोथी पुस्तकों पर व्यंग्य

शिक्षा जगत की विकृतियों पर व्यंग्य

फर्जी जनसेवकों पर व्यंग्य

कुण्ठित रचनाकार पर व्यंग्य

कुत्ता संस्कृति पर व्यंग्य

पंचम अध्याय

हिमांशु जी की बालकथाओं का अनुशीलन

चखकर देखो

फुलिया और मुनिया

रोचक बाल कथाऐं

कछुए की बहिन

अपना–अपना जीवन

धोखेबाज भेड़िया

मुन्ना और मेरा दोस्त इत्यादि।

षष्टम् अध्याय

उपसंहार

साक्षात्कार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मूल ग्रन्थ

सहायक ग्रन्थ।

प्रथम अध्याय

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हिमांशु जी का व्यक्तित्व

जन्म एवं जन्म स्थान–हिमांशु जी का जन्म 19 मार्च, 1949 में 'मध्यमवर्गीय परिवार में' ग्राम हरिपुर, जिला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

पारिवारिक स्थिति–'हिमांशु जी के पिता श्री सोमसिंह काम्बोज खेती का कार्य करते थे तथा माता श्रीमती शान्ति देवी काम्बोज एक आदर्श गृहणी थी। जैसे–जैसे परिवार बढ़ता गया, खर्चे भी बढ़ने लगे। आपके पिताजी ताउजी के साथ दिल्ली में हौजरी की नौकरी करने लगे। आर्थिक स्थिति के परिणामस्वरूप इनका गाँव के ही एक सरकारी स्कूल में दाखिला करा दिया गया था। इनका बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता। प्राथमिक शिक्षा गाँव में पूरी करके आप बेहट कस्बे के सरकारी जूनियर स्कूल में पढ़ने जाने लगे। जहाॅं पढ़ाई का उपर्युक्त माहौल न देखकर इनके पिताजी ने इनका एडमिशन गाँव से 8 किलोमीटर दूर 'पब्लिक नेशनल इण्टर कॉलिज साढौली कदीम में करा दिया। 'हिमांशु' जी ने कक्षा 12 तक की पढ़ाई विज्ञान वर्ग से की परन्तु रसायन शास्त्र के प्रवक्ता के भेदपूर्ण व्यवहार के कारण बीए प्राइवेट इतिहास, संस्कृत व हिन्दी के साथ किया।

शिक्षा और आजीविका–कक्षा 12 तक विज्ञान वर्ग से पढ़ाई की तथा किसी कारणवश बी0ए0 प्राइवेट संस्कृत, इतिहास व हिन्दी विषय लेकर किया। इस प्रकार आपने बी0ए0 एवं एम0ए0 (हिन्दी) व्यक्तिगत माध्यम से प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण की। हिमांशु जी ने आजीविका का प्रारम्भ एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षक के रूप में की। तथा निरन्तर मेहनत करते हुए केन्द्रीय विद्यालय में प्राचार्य के पद पर आसीन रहे। साथ ही साथ लेखन कार्य विभिन्न विधाओं पर तथा सम्पादन कार्य में संलग्न रहे।

अभिरूचि–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी अभिरूचि बाल्यावस्था से विज्ञान वर्ग के विषयों में विशेषकर गणित में थी। परन्तु कक्षा 12 में रसायन के प्रवक्ता द्वारा अपने साथ प्रयोगात्मक परीक्षा में भेदपूर्ण व्यवहार करने के कारण आपने अपनी अभिरूचि प्रयोगात्मक रहित विषयों की ओर बढ़ायी। आपने बी0ए0 प्राईवेट (हिन्दी, संस्कृत व इतिहास) तथा स्नातकोत्तर हिन्दी से व्यक्तिगत तौर पर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। आपकी लेखन कार्य में अभिरूचि बाल्यकाल से ही थी। जब आप नवी कक्षा में थे तब आपकी पहली कविता 'आर्य प्रेमी' मासिक (सम्पादक हकीम बीरुमल प्रेमी, मोहन लाल प्रेमी) अजमेर के दीपावली अंक में छपी। तब से लेकर आज तक अद्यतन रूप से हिमांशु जी गद्य व पद्य की विभिन्न विधाओं में अपनी अभिरूचि का परचम लहरा रहे है।

<u>हिमांशु जी का कृतित्व–</u>

लघुकथा संग्रह–दो संस्करण–असभ्य नगर

लघुकथा समालोचना–लघुकथा का वर्तमान परिदृश्य

व्यंग्य संग्रह–खूँटी पर टंगी आत्मा

बाल कथा –हरियाली और पानी (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा)

बाल कथा –(हिंदी और अंग्रजी)–फुलिया और मुनिया। अंग्रजी संस्करण दो बार इटली के विश्व पुस्तक मेले में प्रदर्शित।

रोचक बाल कथाऐं

पोस्टर बाल कथाऐं ....झरना, सोनमछरिया, कुँआ।

लघु उपन्यास – धरती के ऑसू, दीपा, दूसरा सवेरा।

कविता संग्रह – अँजुरी भर आसीस, कुकडूँ कूँ , हुआ सवेरा, मैं घर लौटा, तुम सर्दी की धूप, बनजारा मन।

काव्य समालोचना – सह–अनुभूति एवं काव्यशिल्प।

व्याकरण – बाल भाषा, भाषा चन्द्रिका।

हाइकु संग्रह – मेरे सात जनम, माटी की नाव, बन्द कर लो द्वार।

तॉका संग्रह – झरे हरसिंगार।

तॉका–सेदोका–चोका संग्रह – तीसरा पहर

तॉका और चोका संग्रह – (संयुक्त रुप से डॉ हरदीप संधु के साथ)–
मिले किनारे।

अनुवाद – राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के लिये 2 पुस्तकों का अंग्रेजी से
हिंदी में अनुवाद।

संपादन – 39 पुस्तकें

आयोजन, मेरी पसन्द (3 भाग), बाल मनोवैज्ञानिक लघुकथाऐं, लघुकथा देश–देशान्तर, मानव मूल्यों की लघुकथाऐ लघुकथाएँ, जीवन मूल्यो की (सुकेश साहनी के साथ) चन्दनमन, भावकलश, हाइकु काव्य शिल्प एवं अनुभूति, गीत सरिता (3 भाग) डॉ0 सुधा गुप्ता के हाइकु में प्रकृति, गीले आखर–(डॉ0 भावना कुवंर के साथ) यादों के पाखी, अलसाई चाँदनी, उजास साथ रखना, पीर भरा दरिया–(डॉ0 भावना कुंवर और डॉ0 हरदीप सन्धु के साथ), स्वप्न श्रृंखला–(डॉ0 कविता भट्ट के साथ) झराप्यार निर्झर (डॉ ज्योत्सना शर्मा के साथ) नैतिक कथाएँ (5 भाग नवीन चतुर्वेदी के साथ) डीसन्ट हिन्दी रीडर (8 भाग) एक दुनिया इनकी भी (2 भाग)।

विशेषांक सम्पादन – सरस्वती सुमन (दो हाइकु एवं एक बाल विशेषांक) नेवा : हाइकु नेपाल (हिन्दी हाइकु विशेषांक) शोध दिशा – दो लघुकथा विशेषांक, हरिगन्धा (4 विशेषांक), हिन्दी चेतना और अभिनव इमरोज के लघुकथा विशेषांक - सुकेश साहनी के साथ ! सरस्वती सुमन का क्षणिका- विशेषांक - हरकीरत हीर के साथ, अविराम (हाइकु परिशिष्ट, उमेश महादोषी)

अन्य सम्पादन कार्य – हिन्दी चेतना त्रैमासिक (कनाडा) अन्तर्जाल : **https://www.hindichetna.com/,सहज साहित्य & sahajzhity.com, मार्च 2007 से ब्लॉग– laghukatha.com, https://hindihaiku.wordpress.com/, https://www.Trivenii.com/**

अन्य गतिविधियॉं– नवतरंग कक्षा 4 एवं 5_(इन्डिनिका पब्लिकेशन्स), सुगन्धा कक्षा 2,3,एवं 5 (सार पब्लिकेशन्स), 2020 के पाठ्यक्रम में रचनाऐं, स्नातक पाठ्यक्रम में बलराम द्वारा सम्पादित छोटी बड़ी कथाऐं (2019) , ईशान प्रकाशन दिल्ली, लघुकथा लहरी, लघुकथा कौस्तुभ (2020) राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

कार्यशालाऐं – संसाधक – हरियाणा साहित्य अकादमी (10), नेशनल बुक ट्रस्ट (4) , केन्द्रीय विद्यालय संगठन (6) , निदेशक (6) , विषय विशेषज्ञ (1)।

प्रसारण– रेडियो सीलोन, आकाशवाणी गुवाहटी, रामपुर, नजीबाबाद, अम्बिकापुर एवं जबलपुर, दूरदर्शन हिसार, टैग टी0वी0 और सी0एन0 (कनाडा से)।

केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त।

सम्प्रति–स्वतन्त्र लेखन।

सम्प्रति सम्पादक–हिन्दी चेतना त्रैमासिक, वेब पत्रिकाएँ (लघु कथा डॉट कॉम, हिन्दी हाइकु, त्रिवेणी में सहयोगी सम्पादक), सहज साहित्य (मार्च 2007 से अद्यतन ब्लॉग)।

द्वितीय अध्याय

लघु कथा, बाल कथा एवं व्यंग्य विधा का साहित्यिक विमर्श–

लघु कथा का साहित्यिक विमर्श–लघु कथा, हिन्दी साहित्य में एक नवीनतम विधा है। लघु कथा एक छोटी कहानी नहीं है, यह कहानी का संक्षिप्त रूप भी नहीं है। यह विधा अपने एकांगी स्वरूप में किसी भी एक विषय, एक घटना या एक क्षण पर आधारित होती है। आधुनिक लघु कथा अपने पाठकों में चेतना जाग्रत करती है। यह किसी भी चुटकुले या व्यंग्य से भी पूरी तरह अलग है।

इसका श्रीगणेश छत्तीसगढ़ के प्रथम पत्रकार और कथाकार माधवराव सप्रे के 'एक टोकरी भर मिट्‌टी' से होता है। हिन्दी के अन्य विधाओं की तुलना में अधिक लघु आकार होने के कारण यह समकालीन पाठकों के अधिक करीब है और सिर्फ इतना ही नहीं यह अपनी विधागत सरोकार की दृष्टि से भी एक पूर्ण विधा के रूप में हिन्दी जगत् में समादृत हो रही है।

इसे स्थापित करने में जितना हाथ रमेश बतरा, जगदीश कश्यप, कृष्ण कमलेश, भगीरथ सतीश दुबे, बलराम अग्रवाल, विक्रम सोनी, सुकेश साहनी, विष्णु प्रभाकार, हरिशंकर परसाई आदि समकालीन लघु कथाकारों का रहा है उतना ही कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, कमल चोपड़ा, सतीशराज पुष्करणा, रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' आदि संपादकों का भी रहा है।

लघुकथा की भाषा सरल होनी चाहिए। पांडित्यपूर्ण भाषा लघुकथा के लिए घातक है। भाषा व्यंजनापूर्ण हो, तो और अधिक अच्छा होगा, लेकिन हर लघुकथा में 'व्यंजना' का आग्रह उसे दुरुह भी बना सकता है। शीर्षक के विषय में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वह लघुकथा की धुरी का काम करे। शीर्षक को सिद्ध करने के लिए लघुकथा नहीं लिखी जानी चाहिए। शीर्षक लघुकथा का मुकुट है, मुकुट वही अच्छा होता है, जो न सिर में चुभे और न सिर के लिए भार हो।

शैली लघुकथाकार एवं कथ्य की सफल अभिव्यक्ति है। विषय एवं आवश्यकतानुसार उसमें बदलाव आयेगा ही। यदि एक लेखक की सभी लघुकथाएँ (विषय–वस्तु भिन्न होने पर भी) एक ही शैली में लिखी गई हैं, तो वे उबाऊ शैली का उदाहरण बन जायेंगी। श्रेष्ठ लघुकथा वह है जो पाठकों को बॉध ले। इसके लिए ऐसा कठोर नियम नहीं बनाया जा सकता कि सभी कथातत्व उपस्थित हों। सबकी उपस्थिति में भी लघुकथा घटिया हो सकती है। पात्र, कथावस्तु, भाषा–शैली, उद्‌देश्य, वातावरण, संवाद आदि आवश्यक तत्व संश्लिष्ट रू॰ में उपस्थित हों। ठीक वैसे ही जैसे–चन्द्रमा और चॉदनी, दोनों अलग–अलग होते हुए भी संश्लिष्ट हैं। एक ही अनुपस्थिति/उपस्थिति दूसरे की भी अनुपस्थिति/उपस्थिति बन जाती है। किसी विधा का मूल्यांकन उसके पाठक करते हैं।

'व्यंग्य' विधा का साहित्यिक विमर्श–व्यंग्य से तात्पर्य उस अनुभव या भाव से है जो मन को प्रसन्नचित्त करता है। किसी प्रकार की कोई घटना, काण्ड, प्रसंग गद्य की विधाओं का रूप जैसे (कहानी, नाटक, एकांकी) जिसमें हास्य रस का पुट हो व्यंग्य कहलाता हैं। इसके अन्तर्गत चुटकुलों को सर्वसम्मति से स्थान दिया गया है।

व्यंग्य का अर्थ–व्यंग्य की उत्पत्ति 'अज्ज' धातु में 'वि' उपसर्ग व 'ण्यत्' प्रत्यय लगाने से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है–ताना कसना। दूसरे शब्दों में, 'व्यंग्य' एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति अथवा रचना है जिसके द्वारा व्यक्ति अथवा समाज की विसंगतियों और विडंबनाओं या उसके किसी पहलू को रोचक तथा हास्यास्पद ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

वर्तमान समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं को देखकर कभी–कभी मन व्यथित हो जाता है। चाहे वह अव्यवस्था सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या धार्मिक हो। मन इन अव्यवस्थाओं का प्रतिकार करना चाहता है, परन्तु किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से हम इनका प्रतिकार नहीं कर पाते और ये भावनाएँ मन के किसी कोने में संचित होने लगती हैं। व्यंग्यकार इन्हीं संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास करता है।

व्यंग्य की परिभाषा–विभिन्न साहित्यकारों ने समय–समय पर व्यंग्य को अपने शब्दों में परिभाषित किया है–

डॉ0 ज्ञानप्रकाश ने अपने शोध–ग्रन्थ में खड़ी बोली की हास्य–व्यंग्य कविता का सांस्कृतिक विवेचन किया है। उन्होंने व्यंग्य को निम्न शब्दों को परिभाषित किया है–

''प्रयोजन निष्ठ हास्य, जिसमें समाज में व्याप्त विसंगतियों, चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अथवा व्यक्तिगत हो, पर शोधन भाव से की गई शाब्दिक व्यंजना ही व्यंग्य कहलाती है। व्यंग्य साहित्यकारों का वह अस्त्र है जिसके माध्यम से वह समस्त कटुताओं को काटने का प्रयास करता है। हँसी भी आये और लक्षित के मर्मस्थल पर चोट भी पहुँचें, यही व्यंग्य का सबसे बड़ा कर्म है।''

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, ''व्यंग्य वह है जहाँ (वक्ता) अधरोष्ठों में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर भी वह कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बनाना हो जाता है।''

श्रीलाल शुक्ल के अनुसार–''मैंने व्यंग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र और एक अनिवार्य शर्त के रूप में पाया है।''

डॉ0 रामकुमार वर्मा के अनुसार–''आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तुस्थिति को विकृत कर, उससे हास्य उत्पन्न करना ही व्यंग्य है।''

हरिशंकर परसाई के अनुसार, ''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है।''

व्यंग्य के तत्व–तत्व के बिन्दु हैं जिस पर किसी विधा का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें उन परिस्थितियों का वर्णन किया जाता है जो इस विधा के जन्म के कारक होते हैं। व्यंग्य के तत्व निम्न हैं–

1. विसंगतियों की उपस्थिति।
2. प्रगतिशील व सकारात्मक सोच।
3. नैतिक मूल्यों की रक्षा।
4. गहन चिंतन।

5. पात्रों का चयन।
6. व्यक्ति व समाज का पतन।
7. कठोर व तीक्ष्ण भाषा–शैली।
8. सोद्देश्य आलोचना।
9. बौद्धिकता।

इस प्रकार उपरोक्त तत्वों को ध्यान में रखते हुए एक अच्छी व्यंग्य रचना की जा सकती है।

बालकथा का साहित्यिक विमर्श– बाल साहित्य के अन्तर्गत वह शिक्षाप्रद साहित्य आता है जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया हो। बाल–साहित्य में रोचक शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ बालगीत व कविताएँ प्रमुख हैं। बाल साहित्य की परम्परा बहुत समृद्ध है। पंचतंत्र की कथाएँ बाल–साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

हिन्दी बाल साहित्य लेखन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। पंचतंत्र, हितोपदेश, अमर कथाएँ व अकबर–बीरबल के किस्से बच्चों के साहित्य में सम्मिलित हैं। पंचतंत्र की कहानियों में पशु–पक्षियों को माध्यम बनाकर बच्चों को बड़ी शिक्षाप्रद प्रेरणा दी गई है। बाल साहित्य के अन्तर्गत बाल कथाएँ बाल कहानियाँ व बाल कविता सम्मिलित की गई है।

'श्री जयप्रकाश भारती' को हिन्दी में बाल–साहित्य का युग प्रवर्तक माना जाता है। कहानियाँ सुनना तो बच्चों की सबसे प्यारी आदत है। कहानियों के माध्यम से हम बच्चों को शिक्षा प्रदान करते हैं। बचपन में दादी, नानी, प्यारी माँ हमें कहानियाँ सुनाती थी। कहानियाँ सुनाते–सुनाते कभी तो वे हमें परियों के देश ले जाती थी तो कभी यथार्थवादी बातें सिखा जाती थी।

दरअसल बाल साहित्य का उद्‌देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराना है। आज के बालक कल के भारत के भविष्य हैं। वे जैसा पढ़ेगें, उसी के अनुरूप उनका चरित्र निर्माण होगा। कहानियों के माध्यम से हम बच्चों को शिक्षा प्रदान करके उनका उत्तम चरित्र निर्माण कर सकते हैं। तभी तो ये बच्चे जीवन के संघर्षों का सामना कर सकेंगे।

श्री के0 शंकर पिल्लई द्वारा बाल साहित्य के संदर्भ में 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' की स्थापना 1957 में की गई थी। इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य बच्चों के लिए उचित डिजाइनिंग व सामग्री उपलब्ध कराना है। इसमें 5–16 वर्ष के बच्चों के लिए बेहतर बाल साहित्य उपलब्ध है। जैसे–

पौराणिक कथायें–कृष्ण सुदामा, पंचतंत्र की कहानियाँ, प्रह्लाद आदि।

ज्ञानवर्धक–उपयोगी आविष्कार, पर्वत की पुकार, रंगों की महिमा, विज्ञान के मनोरंजक खेल।

रहस्य रोमांच–अनोखा उपहार, जासूसों का जासूस, ननिहाल में गुजरे दिन, पॉच जासूस।

उपन्यास/कहानियाँ–चौबीस कहानियाँ, इंसान का बेटा, गुड्डी, मास्टर साहब।

महान व्यक्तित्व–महान व्यक्तित्व, भाग 1 से 10 तक।

वन्य जीवन–अम्मा का परिवार, कुछ भारतीय पक्षी, छोटा शेर बड़ा शेर।

पर्यावरण–अनोखे रिश्ते।

क्या और कैसे–कम्प्यूटर, घड़ी, टेलीफोन, रेलगाड़ी।

चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट ने बच्चों के लिए असमिया, बंगाली, हिन्दी, गुजराती, कन्नड, मलयालम, मराठी, पंजाबी, तमिल और तेलगू भाषाओं में सचित्र पुस्तकें प्रकाशित की हैं। पत्रिकाओं के स्तर पर अनेक भारतीय भाषाओं में चंपक, हिन्दी में बालहंस, बाल भारती, नन्हें सम्राट, नन्दन तथा युवाओं के लिए मुक्ता प्रकाशित की जाती है।

हिन्दी में बाल साहित्य– आधुनिक बाल साहित्य के प्रणेता के रूप में डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे ने 300 से अधिक पुस्तकें लिखीं। साहित्य के प्रतिष्ठित संस्थाओं से अधिक राष्ट्रीय एवं राजकीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य के क्षेत्र में समग्र योगदान हेतु वर्ष 2011 के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

तृतीय अध्याय

हिमांशु जी की लघुकथाओं का अनुशीलन –

एकाग्रता के साथ किसी वरिष्ठ, वरेण्य एवं विधा वैविध्य से युक्त अनुभवी साहित्यकार के व्यक्तिपरक, साहित्यिक व सामाजिक अवदान का अध्ययन वस्तुतः अत्यन्त कठिन होता है। श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी के साहित्यिक अवदान का अनुशीलन करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। श्री हिमांशु एक आदर्श अध्यापक रहे तथा केन्द्रीय विद्यालय में प्रचार्य पद की प्रतिष्ठा बढ़ाते हुए विभिन्न राज्यों में अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा से अध्ययन –अध्यापन की परम्परा को आगे बढ़ाया।

अनुशीलन यदि पूर्वाग्रहों से मुक्त हो तो साहित्यिक यात्रा का सही–सही आंकलन तथा अनुशीलन रोचक प्रक्रिया है।

हिमांशु जी का मानना है कि लघुकथा मात्र शब्दों का जाल नहीं अपितु यह परिपूर्ण नैतिक कथ्य है। ये मानव के बहुआयामी जीवन को आकार एवं गति प्रदान करने की सामर्थ्य से युक्त होती हैं। लेखक ने लघुकथा की रचनात्मक बारीकियों को स्पष्ट करते हुए बताया है कि आकार में छोटी होने के कारण लघुकथा मे वर्णन और विवरण का अवकाश नहीं होता वरन् विश्लेषण और संकेत एवं व्यंजना से काम चलाया जाता है। अर्थात् लघुकथा में भाषिक संयम और व्यंजनात्मकता होती है। जिसका निर्वहन शीर्षक चयन से लेकर कथानक तक संतुलित रूप से होता है।

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी पहली लघुकथा 1972 में जगदीश कश्यप के समपादन में मिनीयुग में छपी थी। तब से अद्यतन हिमांशु जी ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी लेखनी द्वारा वैविध्यपूर्ण लघुकथाएँ हिन्दी जगत को प्रदान की हैं।

इक्कीसवीं सदी इण्टरनेट की सदीं है और साथ ही साहित्य की उन विधाओं की भी सदीं है; जो समयाभाव से जूझते पाठक को भले ही कुछ एक पल के लिए, साहित्य से जोड़ने का कार्य कर रही हैं। इसी सशक्त माध्यम के कारण लघुकथा, जैसी विधाएँ तमाम अवरोधों ओर अधकचरे रचनाकारों की मार खाकर भी पाठकों के बीच अपना स्थान बनाए रखने के लिए प्रयासरत हैं। लघुकथा ने लघुकथा डॉट कॉम (सुकेश साहनी एवं निशान्त काम्बोज) के माध्यम से 2000 में इण्टरनेट की दुनिया में कदम रखा। फॉण्ट की समस्याओं का समाधान होने पर जुलाई 2007 से सुकेश साहनी एवं रामेश्वर काम्बोज ने इसे नियमित मासिक का रूप दिया। तब से आज तक इसकी यात्रा हिन्दी जगत् में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। और विश्व के 40 देशों तक अपनी पहुँच बना चुकी है। नवम्बर–दिसम्बर 2007 में इसके बाल मनोवैज्ञानिक लघुकथाएँ विशेषांक ने पाठकों में काफी लोकप्रियता हासिल की है। सत्य साई केन्द्र दिल्ली ने इस अंक का उपयोग विभिन्न केन्द्रीय और नवोदय विद्यालयों के प्राचार्यों की वर्कशॉप में प्रेरक सामग्री के रूप में किया। किताबघर ने इसे पुस्तक रूप में भी प्रस्तुत किया है। भाषान्तर के माध्यम से अंग्रेजी, जर्मन, संस्कृत, पंजाबी, सिन्धी, मराठी, नेपाली और उर्दू भाषाओं में भी लघुकथाएँ प्रस्तुत की गईं। नवम्बर–दिसम्बर 2009 में मानव मूल्यों की लघुकथाएँ विशेषांक ने अपने सामाजिक दायित्व का भी पूरी तरह निर्वाह किया है।

हिन्दी जगत् में अपनी विशिष्ट पहचान वाली पत्रिका हंस मासिक ने शुरू से ही इस विधा को महत्व दिया है। अपने इण्टरनेट संस्करण हंस मंथली डॉट इन के माध्यम से इस विधा को और भी विस्तार दिया है। इस दिशा में पाखी डॉट इन, उदन्ती डॉट कॉम, अमर उजाला डॉट कॉम, राजस्थान पत्रिका डॉट कॉम, हिन्दी वेब दुनिया डॉट कॉम, हिन्दी गौरव डॉट कॉम आदि प्रमुख है। इन संस्करणों में उदन्ती डॉट कॉम और अमर उजाला डॉट कॉम, हिन्दी गौरव डॉट कॉम का चयन गुणात्मक रूप से अधिक कसा हुआ है।

चतुर्थ अध्याय

हिमांशु जी की व्यंग्यात्मक रचनाओं का अनुशीलन

व्यंग्य विधा बीसवीं शताब्दी की देन है। इस बीसवीं शताब्दी में वह लोकप्रिय भी बनीं, अपने सही रूप में निखार भी इसने पाया। तथापि खेद के साथ कहना पड़ता है कि व्यंग्य जितनी शीघ्रता से चरमोत्कर्ष पर पहुँचा, उतनी ही शीघ्रता से वह अधोगति को भी प्राप्त हुआ।

व्यंग्य स्थापित और लोकप्रिय हुआ अपनी पैनी धार अथवा विचारत्मक नुकीलेपन से और उसी को व्यंग्य क्रमशः अखबारी लेखन के कारण खोता चला गया। इसकी लोकप्रियता के कारण इसमें सामान्य कोटि के लोग घुस आयें, अखबारों का प्रश्रय पाकर ये नामवर बन गए, और इन्हीं का लेखन आगे की पीढ़ी का आदर्श लेखन बन गया। ऐसे परिवेश में जब 'खूँटी पर टँगी आत्मा' जैसी व्यंग्य कृतियाँ पढ़ने को मिलती है तो विशेष आनन्द का अनुभव होता है।

रामेश्वर काम्बोज एक समर्थ लघुकथा लेखक के रूप में काफी ख्यात है। उनमें व्यंग्य की पैनी दृष्टि है, इसमें कोई संदेह नहीं। विशेष बात यह है कि वे 'चालू' व्यंग्य से अछूते है। 'चालू' व्यंग्य को उन्होंने आदर्श नहीं माना है। इसका कारण है कि वे एक अध्ययनशील अध्यापक है। वे भाषा की शक्ति के साथ–ही–साथ साहित्य के मर्म के भी अच्छे जानकार है।

हिमांशु जी का व्यंग्य एक अच्छे व्यंग्य का प्रयास है। उनके पास जहाँ पैनी दृष्टि है वहाँ पैनी भाषा भी है। राजनीति, शिक्षा, साहित्य, समाज की विकृतियों को उन्होंने जिस खूबी के साथ पकड़ा है, उसी तरह उनका ध्यान गया है मनुष्य की प्रदर्शन, डींग, प्रशस्ति तथा लोभ जैसी कमजोरियों पर।

'खूँटी पर टँगी आत्मा' रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की व्यंग्य रचनाओं का संग्रह है। इन्होंने अपनी व्यंग्य को माध्यम से मानव मन की कमजोरियों को तो स्पर्श किया है, राजनीति, समाज व साहित्य की विकृतियों पर भी अपनी कलम चलायी है।

हिमांशु जी लघुकथा लेखक के रूप में जाने जाते हैं लेकिन व्यंग्य लेखन पर यह उनका पहला अच्छा प्रयास है। कहीं–कहीं पर रचनाएँ, हास्य रचनाएँ अधिक लगती हैं इससे विषय की गंभीरता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। इसके बावजूद इनकी रचनाओं में हल्कापन नहीं है। रचनाओं में कसाव बरकरार है। ये एक समर्थ व्यंग्यकार के रूप में सामने आ रहे हैं।

पंचम अध्याय

हिमांशु जी की बाल–कथाओं का अनुशीलन

कहानी एक ऐसी विधा है, जिसका आरम्भ कब से हुआ, शायद सही–सही कोई भी नहीं जानता संभवतः भाषा के विकास से बहुत पहले ही मानव ने कहानी कहने या बताने की कला सीख ली थी।

भावी पीढ़ी यानी हमारे बच्चों तक अपनी जिन्दगी के अनुभवों को ज्ञान को पहुॅचाने के लिए एक रोचक कहानी से बेहतर भला और क्या होगा। एक कहानी जो न केवल नौनिहालों को एक अनोखे कल्पना लोक में ले जाती है, वहॉ आपस में मिल–जुलकर रहने वाले जीव–जन्तु होते हैं, परियॉ और राजकुमार–राजकुमारियॉ और राक्षस भी होते हैं, बल्कि कई बार उन्हीं की तरह इंसान भी होते हैं।

ठन कहानियों से न केवल बालकों का मानसिक विकास होता है, वरन् उन्हें अच्छे–बुरे का अंतर सिखाकर उनके अन्दर एक सामाजि और नैतिक दायित्व का भी विकास बहुत आसानी से किया जा सकता है। इन सब चीजों के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है, उन कहानियों को बच्चों की उम्र के ही हिसाब से एक रोचक तरीके से गढ़ना .... और इस मापदण्ड पर काम्बोज जी का बालकथा संग्रह–एक दुनिया इनकी भी, बिल्कुल खरा उतरता है। यह एक सर्वमान्य बात है कि बच्चों को कहानियाँ सुनना बेहद प्रिय रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु जी' ने ज्ञान–विज्ञान, बालकथा और लोककथाओं को नए रूप में प्रस्तुत किया है।

जीवन में हर चीज का अपना और अपने समय पर महत्व होता है। यही जीवन का सार भी है। 'हिमांशु जी' द्वारा रचित छोटी–पुस्तिका 'चखकर देखों में इस महत्व की बात को कई वस्तुओं के उदाहरण देकर समझाया है। जैसे नीम की पत्तियाँ कड़वी होती है तथा कच्ची निबौरी भी, लेकिन पक्की निबौरी मीठी होती है। इसी प्रकार से कच्चा आम खट्टा व पकने पर मीठा होता है। कटहल फीका, लेकिन पककर वही मीठा व खुशबुदार हो जाता है। वहीं कच्चा भुट्टा मीठा परन्तु पककर फीका। इसी प्रकार कच्चा मटर भी मीठा परन्तु पककर स्वादहीन हो जाता है। इस छोटी पुस्तिका में थोड़े से शब्दों में इन रोज की व्यावहारिक बातों को बड़ी सहजता से समझाया गया है।

बच्चे के मस्तिष्क का समुचित विकास हो इसके लिए माता–पिता, दादा–दादी की ज्ञानवर्धक शिक्षा बहत जरूरी होती है। रामेश्वर काम्बोज, 'हिमांश' द्वारा रचित 'रोचक बाल कहानियाँ' ऐसे बच्चों के लिए आशा की किरण है। ये सभी कहानियाँ बाल–मनोविज्ञान पर आधारित है।

उपसंहार

द्रुतगति से युक्त आधुनिक युग में लघुकथा विधा पाठकों के लिए अति उपयोगी है। कम समय में अधिक प्रसंगों का आनंद लेने के साथ ही पाठक समाज के आधुनिक प्रसंगों के सम्बन्ध में सचेत होकर समाज के प्रति अपने योगदान के प्रति जागरूक भी होता है। मुझे रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' कृत लघुकथा का वर्तमान परिदृश्य (लघुकथा समालोचना) पुस्तक के अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने पढ़ने के स्थान पर अध्ययन शब्द उपयोग किया, क्योंकि इस पुस्तक को पढ़ लेना मात्र पर्याप्त नहीं, अपितु लघुकथा सम्बन्धी सूक्ष्मताओं को गहनता से समझाने हेतु यह उल्लेखनीय कार्य है। लघुकथा लेखन विकासक्रम के भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह कहना प्रासंगिक है कि 'हिमांशु' जी ने इस विधा को नवीनतम उँचाइयों तक ले जाने का अथक प्रयास किया; जो निरन्तर जारी है। इसी श्रृंखला में यह समालोचनात्मक पुस्तक लघुकथा के विविध पक्षों का विशिष्ट विवेचना प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास है।

इसी प्रकार व्यंग्य की एक समर्थ विधा है, जिसके माध्यम से रचनाकार सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध सशक्त कटाक्ष करता है। इसे हास्य की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। यह और बात है कि व्यंग्य में हास्य का किंचित प्रवेश हो सकता है। इस निष्कर्ष पर अगर हम हिमांशु जी के व्यंग्य को देखे तो मुझे लगता है कि रचनाकार ने सौ फीसदी व्यंग्य ही रचे हैं। व्यंग्य पर हिमांशु जी दो टूक कहते हैं–' व्यंग्य विभिन्न विधाओं में अपनी पैठ बना चुका है, तो स्वतंत्र विधा के रूप में भी अपनी उपस्थिति साहित्य में दर्ज करा चुका है।'यह बात उन्होंने बिल्कुल सही कही हैं।

दादा–दादी, नाना–नानी, माता–पिता आदि बच्चे के मस्तिष्क के समुचित विकास के लिए ज्ञानवर्धक शिक्षा के रूप में कहानियॉ सुनाते हैं जो बच्चों को बेहद प्रिय होती है। इन्हीं कहानियों के माध्यम से बुजुर्ग लोग उन्हें नैतिक शिक्षा के साथ–साथ जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा भी प्रदान करते हैं। इसी क्षेत्र में बालमनोविज्ञान के जानकार हिमांशु जी ने भी सराहनीय कार्य किया है। इस प्रकार कह सकते हैं कि रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी ने हालांकि गद्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी का जादू चलाया है। परन्तु लघुकथा, व्यंग्य रचनाऍ एवं बालकथाओं में विशेष रूप से अमूल्य योगदान रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

1–मूल ग्रंथ –

लघुकथा का वर्तमान परिदृश्य–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

गद्य की विभिन्न विधाएँ–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली।

असभ्य नगर एवं अन्य लघुकथाएँ–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

खूँटी पर टँगी आत्मा–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

बतियाती पगडण्डी–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली।

रोचक बाल कथाएँ–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली।

बाल कथा–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

नूतन भाषा–चन्द्रिका–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

बाल भाषा–व्याकरण –रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

सह–अनुभूति एवं काव्यशिल्प–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

छन्द विधान एवं सृजन–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली।

हाइकु आदि काव्य धारा–रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

2–सहायक ग्रंथ –

गद्य–तरंग, डॉ0 कविता भट्ट, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ0 नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, शिप्रा रिवेरा, इंदिरापुरम

सामान्य हिंदी, डॉ0 हरदेव बाहरी व डॉ0 केदार शर्मा, कमल चन्द जैन, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर.

हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली.

हिंदी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, गोविन्द पाण्डेय व सरस्वती पाण्डेय, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद.

वेबसाइट–

1. www.hindijornal.com
2. httpa://www.google.co.in
3. www.hindigrammar.in
4. www.laghukatha-varta.blogspost.com
5. www.hindijunj.com
6. hi.M.wikipeida.org
7. www.pravakta.com